
सुना बच्चा
47
८११.०८
रघु।सु

सुनो बच्चो !



द्वितीय संस्करण सं० २००६
प्रकाशक
अ० भा० राष्ट्रीय साहित्य
प्रकाशन परिषद्
स्वराज्य पथ, सदर मेरठ ।

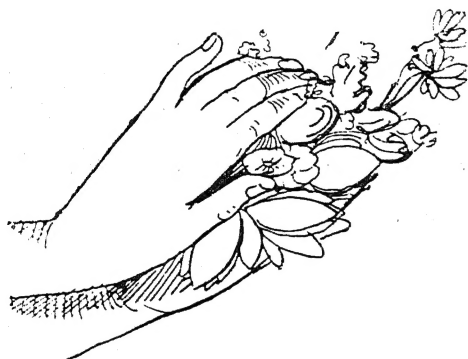
मूल्य १॥)

मुद्रक -
पीयूष चन्द्र
सरस्वती प्रेस, मेरठ ।



'बापू' ! तुम हो कहां ? बिलखते हृदय हमारे ।
आज दृगों का नीर ढूंढता चरण तुम्हारे ॥
नौकाएँ मँझधार हमारी डोल रही हैं ।
'बापू' ! बोलो ! आंखें तुम्हें टटोल रही हैं ॥

सूर्यास्त के बाद
३० जनवरी १९४८



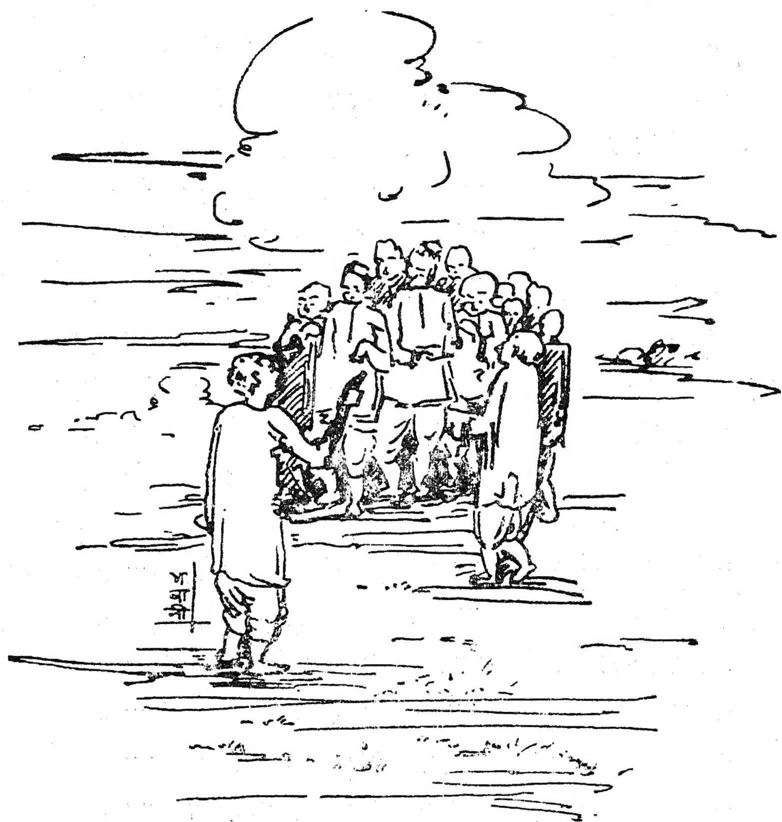


अमर ज्योति

बापू की याद में

हाय ! दीप बुझ गया देश का जलता जलता ।
कर्णधार चल दिया सृष्टि का चलता चलता ।।
ढलता ढलता सूर्य किन्तु दे गया उजाला !
हा ! हा ! काल कराल ! हाय ! यह क्या कर डाला !

क्रम



बापू ने कहा –

सुनो बच्चो ! किसान की कहानी, वीरों का इतिहास, अच्छे बच्चों का चरित्र, महापुरुषों की जीवनियाँ, ये ही नहीं और भी बहुत सी बातें मैं तुम्हें सुनाऊँगा —

बोलो सुनोगे ?

बच्चों ने प्रसन्नता से कहा — सुनेंगे।

बापू— तुम स्वतन्त्र देश के बालक हो। स्वाधीन देश के बच्चे राजा होते हैं, और वही राजा अच्छा होता है जो सबके दुःख दूर करे। राजा प्रजा का पालक है। उसे अच्छी अच्छी बातें करनी चाहियें। आओ, आज मैं तुम्हें अच्छी अच्छी कहानियां सुनाऊँ।

एक गाँव में दो बालक रहते थे। एक का नाम 'कमल' था और दूसरे का 'भूलू'। एक दिन भूलू ने कमल से कहा— 'ईश्वर नहीं है।' कमल ने कहा — 'ईश्वर है।' भूलू ने ज़िद करते हुए कहा — 'ईश्वर नहीं है।' कमल ने कहा— 'देखो भैया भूलू! हठ तो करो मत, अगर ईश्वर है तो भी उसे मानो, अगर ईश्वर नहीं है तो भी उसे मानो। क्योंकि अगर वह हुआ और तुमने नहीं माना तो फिर खैर नहीं, और अगर नहीं है और तुम मानो तो तुम्हारा बिगड़ता ही क्या है ?'

भूलू ने कहा — 'नहीं कमल ! अगर ईश्वर है तो मुझे दिखाओ, तब मैं मानूं ।'

कमल ने कहा — 'अच्छा' कल तुम मन में ईश्वर का ध्यान धर पाठ याद करना, तुम्हे ईश्वर दिखाई देगा ।'

दूसरे दिन कमल ने ईश्वर का ध्यान धर पाठ याद किया । शाम को जब वह कमल से मिला तब उसने कहा— 'आज मेरे सारा पाठ याद हो गया । मन में ऐसी शान्ति है कि आनन्द आ रहा है । भैया कमल ! मुझे ईश्वर मिल गया ।'

बोलो बच्चो ! ईश्वर को मानोगे या नहीं ? सब बालकों ने ज़ोर से कहा— 'मानेंगे और रोज़ पूजा करेंगे ।'

अच्छा बापू ! यह और बताओ कि ईश्वर कहां कहां रहता है ?

बापू – जहां सत्य है वहीं ईश्वर रहता है । सेवा, धर्म, कर्त्तव्य, प्रेम, संगठन और सब के भले में हम उसके दर्शन कर सकते हैं ।

प्यारे बच्चो ! अब मेरे बचपन की एक कहानी सुनो !

''मेरे मांसाहारी भाई ने २५) के लगभग कर्ज़ कर रखा था । हम दोनों भाई इस सोच में पड़े कि यह ऋण चुकावें किस

तरह। मेरे भाई के हाथ में सोने का ठोस कड़ा था। उसमें से एक तोला सोना काटना कठिन न था।

कड़ा कटा। क़र्ज़ चुका। पर मेरे लिये यह घटना असह्य हो गई। आगे से चोरी न करने का मैंने निश्चय किया। मैंने पिता जी को चिट्ठी लिखकर सारा दोष स्वीकार कर लिया। चिट्ठी में सारा दोष क़बूल किया था और सज़ा चाही थी। आजिज़ी के साथ यह प्रार्थना की थी कि आप किसी तरह अपने को दुखी न बनावें, और प्रतिज्ञा की थी कि आगे से मैं कभी ऐसा न करूंगा।

उन्होंने चिट्ठी पढ़ी। आँखों से मोती की बूंदें टपकने लगीं। चिट्ठी भीग गई। थोड़ी देर के लिये उन्होंने आँखें मूँद लीं, चिट्ठी फाड़ डाली। चिट्ठी पढ़ने को जो वे उठ बैठे थे, सो वे फिर बैठ गये।

यदि मैं चितेरा होता तो आज भी उस चित्र को हूबहू खींच सकता।

इस मोती बिन्दु के प्रेमबाण ने मुझे बींध डाला। मैं शुद्ध हो गया। मेरे लिये यह अहिंसा का पाठ पदार्थ था। आज मैं इसे शुद्ध अहिंसा के नाम से पहिचानता हूं।

ऐसी शान्तिमय क्षमा पिता जी के स्वभाव के प्रतिकूल थी। मैंने तो यह अन्दाज़ किया था कि वे गुस्सा होंगे, पर उन्होंने

तो असीम शान्ति का परिचय दिया। मैं मानता हूँ कि यह दोष की शुद्ध हृदय से की हुई स्वीकृति का परिणाम था। जो मनुष्य अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है, वह मानो शुद्धतम प्रायश्चित्त करता है। मेरी इस दोष स्वीकृति से पिता जी मेरे सम्बन्ध में निःशंक हो गये और उनका महाप्रेम मेरे लिये और भी बढ़ गया।"

बोलो बच्चो! चोरी तो नहीं करोगे?

बालक— कभी नहीं।

अच्छा, अब हंस और कमल की कहानी सुनो! हंस बत्तख के आकार का एक बहुत सुन्दर जलपक्षी है। हंस का रंग सफेद होता है। वह मानसरोवर में रहता है। उसका न्याय दूध और पानी अलग अलग कर देता है। वह न्याय के लिये उदाहरण है। हंस मोती चुगता है। सरस्वती हंस की सवारी करती है। कवि न्याय के लिये हंस की उपमा देते हैं।

बालक— उपमा किसे कहते हैं?

बापू– उपमा को ऐसे समझो, जैसे तुम कभी दवा पीते समय कहो—"नीम की तरह कड़वी दवा है" या मोहन की माँ मोहन से कहे— "मेरा चाँद सा मुन्ना"। तो इसमें नीम से दवा की और चाँद से मुन्ने की उपमा दी गई।

बालक—समझ गये ! समझ गये ! अब आगे सुनाइये !

बापू—हंस हँसते हुए चाँद और बोलते हुए फूल की तरह सबको प्रसन्न करता है । बोलो बच्चो ! तुम हंस से बनोगे ?

सब बच्चे – हां बापू ! हम हंस बनेंगे !!

बापू–कमल एक बहुत सुन्दर फूल है । यह तरह तरह के रंगों का होता है । जब सूर्य निकलता है तब यह खिलता है, और जब सूरज छिप जाता है तब कमल बन्द हो जाता है। कमल कीचड़ से निकलता है, पर रहता है कीचड़ से ऊपर । वह कीचड़ से निकलता है, कीचड़ में धँसता नहीं ।

बोलो ! तुम कमल की तरह बुरी चीज़ों से बचोगे या बुरी बातों में फँसोगे ?

सब बालक– हम कमल से बनेंगे ।

बापू– हंस और कमल बनना चाहते हो तो जैसे मैं कहूं वैसे करते चलो । उन आदर्श वीरों की कहानियाँ पढ़ो जो अमर हैं, जिन वीरों ने संसार को सुखी किया है, जो पथप्रदर्शक हैं, जिन्होंने स्वतन्त्रता स्थिर रक्खी है।

और देखो ,वे आकाश के तारे तथा जलते हुए दीपक तुम से कह रहे हैं, तुम्हें चाहिये कि तुम अच्छे नागरिक बनकर देश की सेवा करो। झूठ और बुरी बातें छोड़ दो । तुम शिक्षित

बनो। तुम्हारा गौरव बढ़ता ही रहे। अत्याचारों से अपने देश की रक्षा करने में तुम प्राणों की बाजी लगा दो। आपस की फूट छोड़ दो। दूसरे देशों के बच्चों से अपनी हँसी न उड़वाओ।

देश में अन्न की कमी है। अन्न पैदा करने के लिये नए-नए तरीकों से खेती के काम में जुट जाना चाहिये। बहुत सी ज़मीन जो खाली पड़ी है उसमें अन्न बोओ। तुम्हारे पास कपड़े की कमी है। यदि हम अपनी आवश्यकता का कपड़ा अपने आप तैयार करें तो देश में कोई भी नङ्गा न रहेगा। तुम स्वावलम्बी बनो! अपने सब काम अपने आप करो। आलस्य से दूर रहकर ही सुखी बन सकते हो।

तुम्हें अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखनी है। तुम्हारा दीपक बुझाने के लिये चारों ओर से हवायें चल रही हैं। तूफान तुम्हें उड़ाना चाहते हैं। शत्रु की आँखें तुम्हें घूर रही हैं।

तुम्हारा कर्त्तव्य है कि शत्रु को भी सीधे रास्ते पर लाओ। वीरता से आगे बढ़ो और ऊँचे स्वर से बोलते रहो 'स्वतन्त्रता देवी की जय!'

दुखियों से प्रेम करो ! मज़दूर के स्वर में गाओ ! सबकी सेवा करो। सबकी बातें सुनो और हृदय में तोलो। अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़ो। वे कवितायें सुनो जो तुम्हें अमर बनायें, जिनमें जीवन हो, जो मौत को जीतने की शक्ति रखती हों, जिनमें देशभक्ति उमड़ी पड़ती हो, जिनसे युग युग में फूल खिलें, जिनसे तुम्हें शिक्षा मिले, जो सन्देश देती हों, जो बसंत बन कलरव करें, जो संसार को स्वर्ग बना सकें, जो किसान के स्वर में बोलें, जो भेद भाव की गांठे खोल दें, जो कोयल सी मीठी बोलें, जो प्रकृति के आंगन में फूल से बच्चों की तरह मुस्करायें ।

उन बालकों में से एक बालक ऐसा भी था जो कवितायें लिखा करता था। उसने कहा— बापू ! मैंने कुछ कवितायें आपके चरणों में बैठ कर लिखी हैं। पर पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे आपकी महायात्रा के बाद लिखी हों। अगर आज्ञा हो तो सुनाऊं ?

प्रतिध्वनि में बापू ने कहा— सुनाओ बालक !

बापू के अस्थिप्रवाह दिवस पर,
१२ फर्वरी सन् १९४८ ई०



राम ! हमें अँधेरे से उजाले में ले जा !



ईश्वर !

हम तेरे बालक हैं ईश्वर !
तुझ से 'आँख मिचौनी खेलें', पड़े रहें तेरे चरणों पर।
तू सब का पालक है ईश्वर !
देशभक्त बालक हों हम सब,
दया धर्म-पालक हों हम सब,
अन्यायों से नहीं डरें हम,
तेरी पूजा किया करें हम,

युद्धवीर हों, कर्मवीर हों, इतनी दया बालकों पर कर !
हम तेरे बालक हैं ईश्वर !
तुझ से 'आंख मिचौनी खेलें', पड़े रहें तेरे चरणों पर।
तू सब का पालक है ईश्वर !

कभी किसी को नहीं सतायें,
घर घर में दीपक बन जायें,
बुरे काम से सदा डरें हम,
सब की सेवा किया करें हम,
ज्ञान माँगते, ध्यान माँगते, तेरे आगे हाथ फलाकर।
हम तेरे बालक हैं ईश्वर !
तुझ से 'आँख मिचौनी खेलें', पड़े रहें तेरे चरणों पर।
तू सब का पालक है ईश्वर !

सच कहने में नहीं डरें हम,
बार बार प्रभु ! नहीं मरें हम,
सब से हँस हँस गले मिलें हम,
कांटों में बन फूल खिलें हम,
हम सब तेरे साथ प्यार से- खेलें मीठे बोल बोल कर।
हम तेरे बालक हैं ईश्वर !
तुझ से 'आँख मिचौनी खेलें', पड़े रहें तेरे चरणों पर।
तू सब का पालक है ईश्वर !



अच्छी बातें

हम छोटे हैं पर निकलेंगे– "मोहन" भैया से आगे ।
वे कल सात बजे जागे थे, हम कल पाँच बजे जागे ॥
सबके आगे हाथ जोड़ कर, मुँह से 'राम राम' बोले ।
माँ के पैर छुवे, माँ बोली, दाँतन करके मुँह धोले ॥

मैंने कहा, साथ बाबा के– अभी घूमने जाता हूँ।
तेरे मन्दिर की पूजा को– फूल तोड़ कर लाता हूँ॥
मां ने कहा, फूल से मुन्ने! फूल तोड़ कर क्या लेगा?
उस को खिलने दे डाली पर, वह सब को सुगन्ध देगा।

फूल डाल पर झूम झूम कर, हँसता और हँसाता है।
और टूटते ही डाली से, मुरझा कर मर जाता है॥
अच्छा माँ! मैं उन फूलों को– पानी देने जाता हूँ।
ताजी ताजी हवा लगेगी, फूल खिला कर आता हूँ॥

और मार्ग में कीकर के माँ! पेड़ खड़े हैं बड़े बड़े।
पेड़ बहुत से आमों के हैं, पेड़ नीम के बहुत खड़े॥
ले बाबा की बेंत, हरी सी– अच्छी दाँतन तोड़ूँगा।
अच्छी अच्छी बात करूँगा, बुरी बात सब छोड़ूँगा॥

बाबा! चलो घूमने उठकर, देखो साढ़े पाँच बजे।
खाट छोड़ दी उस किसान ने, चिड़ियों ने घोंसले तजे॥
उठ कर बाबा चले घूमने, 'वेदो' ने उँगली पकड़ी।
ले बाबा की छड़ी हाथ में, बातें छेड़ीं बड़ी बड़ी॥

बोला, खूब पढ़ूँगा बाबा ! फिर 'गांधी' बन जाऊंगा ।
मैं भी तो 'रावण की लंका', तुम को फूक दिखाऊँगा ॥
बाबा बोले, मैं बूढ़ा हूं, बेटे ! ज़रा छड़ी छोड़ो !
पोता बोला– पेड़ आ गये, तीन चार दांतन तोड़ो !!

मेरी एक, एक मोहन की, और एक माँ को दूँगा ।
खूब रगड़ दांतन दाँतों से, दाँत दूध से कर लूँगा ॥
लो बाबा ! यह गंगा आई, इसमें चलो नहा लें हम ।
तन के साथ साथ मन के भी– अपने पाप बहा लें हम ॥

बाबा पोते ने गंगा में– हर हर कर गोते मारे ।
सोने जैसा बदन हो गया, मन के पाप धुले सारे ॥
फिर हम दोनों ने मन्दिर में– पूजा हाथ जोड़कर की ।
'विद्या दो !' हमने ईश्वर से - विनती कपट छोड़कर की ॥

पूजा करके घर आये हम, माँ से कही कहानी सब ।
मोहन भैया के मुँह में भी, भर भर आया पानी तब ॥
बोले, कल से चला करूँगा, मैं भी रोज़ घूमने अब ।
माँ अपने छोटे बेटे का– माथा लगी चूमने तब ॥



सपेरा

एक नगर में एक सपेरा, खेल दिखाने आया।
रंग विरंगे काले पीले, साँप बहुत से लाया॥
मोहन के घर के आगे आ, उसने बीन बजाई।
बच्चों की टोली की टोली, दौड़ी दौड़ी आई॥

खोल पिटारी हाथ डाल कर, उसने साँप निकाले।
मधुर बीन पर मुग्ध हो गये, विषधर काले काले ॥
ज़हरीले साँपों को उसने– दर दर खूब नचाया।
कर मुट्ठी में क़ैद बीन से– उसने खूब खिलाया ॥

ले साँपों का नाम सपेरा– लगा लूटने माया।
देख सपेरे की चालों को– मोहन दौड़ा आया ॥
बोला, मणियों वाले साँपों ! पड़े पिटारी में क्यों ?
तुम स्वतन्त्र पृथ्वी के वासी, सड़े पिटारी में क्यों ?

तुम्हें क़ैद कर धूर्त सपेरा, मणियाँ लूट रहा है।
सुनो सुनो ! इसकी चालों का, भण्डा फूट रहा है ॥
सुन मोहन की बातें सबने– अपने फण फैलाये।
भागा डर कर छोड़ सपेरा, सब अपने घर आये ॥



लव कुश की तस्वीर

देख तुझे दिखलाऊं मुन्ने ! यह अच्छी तस्वीर ।
तेरे जितने ये दो बालक– चला रहे हैं तीर ॥
तूने रामायण में देखी– जो पीछे तस्वीर ।
उन्हीं राम के 'लव' 'कुश' बालक– चला रहे हैं तीर ॥

बड़े वीर ये बच्चे, इनसे- हार चुके हैं 'राम'।
अमर हो गया, चमक रहा है- इन दोनों का नाम ॥
मां! क्यों लड़े 'राम' से 'लव' 'कुश', यह क्या उल्टी बात ?
अच्छे लड़के सब की सेवा, माँ! करते दिन रात ॥

फिर क्यों लड़े 'राम' से 'लव' 'कुश', माँ इसमें क्या भेद ?
मां बोली- सुन, तुझे सुनाऊं, भेद राम का 'वेद'!
'राम' मार कर जब रावण को- लौटे अपने देश।
'सीता' को बनवास दिलाया, करवा जोगन वेश ॥

अन्धे जग ने रामचन्द्र से- करवाया अन्धेर।
वेद! उसी 'सीता' माता के- ये दो बच्चे शेर ॥
पकड़ युद्ध का घोड़ा करते- युद्ध 'राम' से वीर।
रोक रहे हैं रामचन्द्र के- तीरों पर ही तीर ॥

इनकी माँ 'सीता' है, जिनका- दुनिया भजती नाम।
तेरे बाबा भी कहते हैं, 'जय जय सीता राम' ॥
'लव' 'कुश' बनकर सहो न तुम भी- मां पर अत्याचार।
'वेदो' बोला, माँ! प्राणों से- प्यारा तेरा प्यार।



रेल चल रही

चल रही रेल, हो रहे खेल ।
रेल में होता रहता मेल ॥
एक पल में हो जाते दूर ।
देखते दूर दूर का नूर ॥

आगया यह 'कलकत्ता' शहर ।
देख लो यह 'नानू' की नहर ॥
रेल में वह गायक गा गया ।
देख लो 'ताजमहल' आ गया ॥

और वह 'लालकिला' लो देख !
पुरानी शिल्प शिला लो देख !!
तिरंगा लहराता है वहाँ ।
रेल में बैठे देखो यहां ॥

देख लो वह 'यमुना' बह रही ।
कृष्ण की मधुर कथा कह रही ॥
कहीं पर हैं सरसों के फूल ।
कहीं पर हैं नदियों के कूल ॥

कहीं पर हरे भरे हैं खेत ।
कहीं पर दूर दूर तक रेत ॥
देख लो गंगा नदी महान ।
देख लो तुम सागर की शान ॥

और वे पर्वत कितने बड़े ।
रेल में कितने जंगल पड़े ॥
सामने वह स्टेशन आ गया ।
भीड़ से प्लेटफार्म छा गया ॥

पूरियाँ बिकतीं गर्मा गर्म ।
बिक रहा हलवा तर्मा तर्म ॥
काटता जेबकटा वह जेब ।
देख मां ! कटी हुई यह जेब ॥

बिस्तरा ले जाता वह कुली ।
दवा के जल से गाड़ी धुली ॥
लटकता खिड़की पर वह कौन ?
कट गया मां ! गिरकर यह कौन ?

सँभल कर बढ़ो ! सँभल कर चढ़ो !
रेल से पटरी पर ही बढ़ो !!
रेल सी ही जीवन की रेल ।
यहाँ सब चार दिनों का खेल ॥



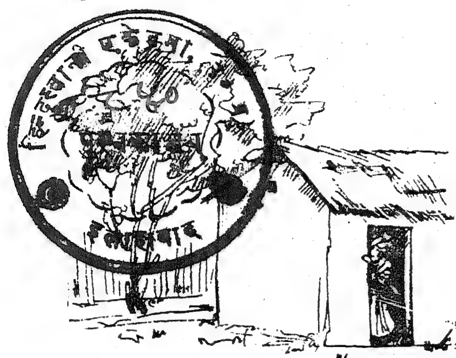
प्यारा भारत देश हमारा ।
दुनिया की आँखों का तारा ॥

उत्तर भारत में पहरे पर– खड़ा हिमालय पहरा देता ।
'हिन्द महासागर' दक्षिण में– लहरा लहरा मन हर लेता ॥
पूर्व दिशा में जागो जागो, सागर का जयनाद गूंजता ।
और 'अरब सागर' पश्चिम में- भारत माँ के चरण चूमता ॥

प्यारा भारत देश हमारा ।
दुनिया की आंखों का तारा ॥

गंगा यमुना और गोमती, नदियां यहां कथा कहती हैं ।
सतलज, व्यास, चनाब, तापती, सदा सुधा देती रहती हैं ॥
हरी हरी प्यारी हरियालो, पेड़ पेड़ पर फूल खिल रहे ।
'राम' 'भरत' की तरह यहां पर- भाई भाई गले मिल रहे ॥

प्यारा भारत देश हमारा ।
दुनिया की आंखों का तारा ॥



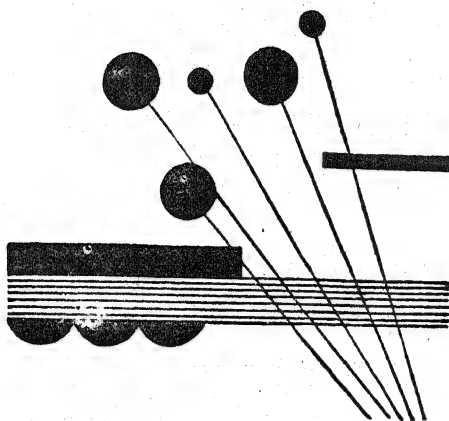


मां मारेंगी !

अगर हाथ देंगे नाली में, मां मारेंगी ।
अगर साथ देंगे गाली में मां मारेंगी ॥
कपड़े मैले नहीं करेंगे, माँ मारेंगी ।
मिट्टी सर में नहीं भरेंगे, मां मारेंगी ॥

लेते नहीं उधार किसी से, मां मारेंगी ।
करें नहीं तकरार किसी से, मां मारेंगी ॥
अगर तोड़ते रहे खाट तो, मां मारेंगी ।
अगर खेल के रहे ठाठ तो, माँ मारेंगी ॥

'वेदो' को यदि तंग करा तो, मां मारेंगी ।
जेबों में यदि रंग भरा तो, मां मारेंगी ॥
नहीं किया यदि याद पाठ तो, मां मारेंगी ।
ली मटरे की अगर चाट तो, मां मारेंगी ॥



नये खेल

गुल्ली डण्डा नहीं खेलते; अब हम नये खेल खेलेंगे ।
तू भी राजा, मैं भी राजा, सारी प्रजा सुखी कर देंगे ।।
लल्लू बोला- खेल वेद ! हम- ताँगे वाले का खेलेंगे ।
या खेलेंगे खेल रेल का, सीटी दे फक फक दौड़ेंगे ।।

वेदो बोला- लल्लू याड़ी ! कल खेलेंगे खेल रेल का ।
गुल्ली डण्डा नहीं खेलते; नाम न ले इस बुरे खेल का ।।
हम सब पढ़े लिखे बालक हैं, नहीं हांकते तांगा तिक तिक ।
भोजन मंत्री 'राजपाल' है, 'बल्देवा' सेना का मालिक ।।

ले आगया 'पटेल' खेल अब- हम राजाओं का खेलेगें ।
अपनी सेना भेज युद्ध कर- अपना काश्मीर ले लेंगे ॥
मैं भारत का भक्त और तू- बनजा काश्मीर का राजा ।
मुझ से मदद माँगने आ तू- मेरा बजे युद्ध का बाजा ॥

तेरे दुश्मन से लड़ने को- मैं अपनी सेना भेजूंगा ।
सब गुण्डों को मार भगाकर- तेरा राज्य तुझे दे दूंगा ॥
चाहे जिसके साथ रहे फिर- यह है काश्मीर की राज़ी ।
लेकिन राज्य नहीं कर सकता- कहीं किसी पर कोई नाज़ी ॥

भारत के राजा 'वेदो' पर- लल्लू ने चिट्ठी भिजवाई ।
उसमें लिखा, फौज गुण्डों की- काश्मीर पर चढ़ कर आई ॥
चिट्ठी पाते ही वेदो ने- अच्छी सेना एक बनाई ।
गुण्डों की खूनी फ़ौजों पर- शंख बजा कर करी चढ़ाई ॥

पूरब दक्षिण से वेदो ने- गुण्डों पर कर दिया आक्रमण ।
भारत वीरों की जय जय से- गूंज उठा क्षण में रण प्राङ्गण ॥
बड़ी वीरता, बड़ी नीति से- सारे गुण्डे मार भगाये ।
इसी तरह वेदो बालक ने- राजाओं के खेल खिलाये ॥



होली है

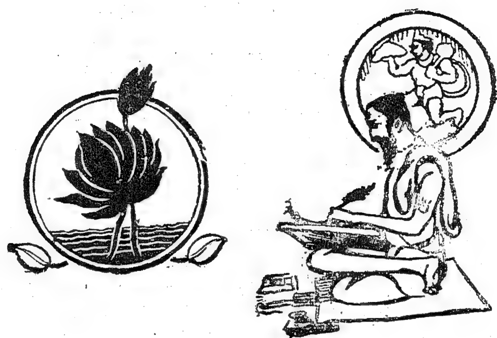
होली है ! होली है ! होली !!
खेल रही थी चौराहे पर– बच्चों की टोली की टोली।

आया एक किसान उधर को;
उसका मुँह काला कर डाला।
एक दूसरे बालक ने आ –
गारा उसके मुँह पर डाला ॥
कांटा लगा खींच ली टोपी,
सर में नीला रंग भर दिया।
कपड़े फाड़ दिये निर्धन के।
सब ने पागल उसे कर दिया ॥

हार जूतियों का पहिनाया, फिर सब की यह गूंजी बोली-
होली है ! होली है ! होली !!

कोट और पतलून नचाते–
एक मुछमुँडे बाबू आये।
उनको घेर लिया बच्चों ने।
बिगड़े दिल बाबू घबराये।
कहा अकड़ कर, क्या है? क्या है?
क्या क्या में उनको रँग डाला।
तारकोल से पोत दिया मुँह,
पालिस सा चमका मुँह काला॥
फिर हँस दिये ज़ोर से बच्चे- होली है! होली है! होली!!
होली है! होली है! होली!!
कोई नीला, कोई पीला,
कोई काले मुँह वाला था।
कोई भालू, कोई बन्दर,
कोई रावण का साला था॥
कुछ होलीवाले उल्लू को–
चढ़ा गधे पर ले जाते थे।
चढ़ी हुई थी भङ्ग रङ्ग की,
पागल जैसे चिल्लाते थे॥
चौराहे पर चीख उठे सब– होली है! होली है! होली!!
होली है! होली है! होली!!

ऐसी होली देख दौड़ कर –
मोहन उस होली में आया।
मिलो प्रेम से, खेलो होली,
उस ने बच्चों को समझाया ॥
होली खेलो, लेकिन लल्लू –
करो न स्याही से मुँह काला।
देश प्रेम का रंग घोल कर –
सारे जग में करो उजाला ॥
सब ने मोहन की जय बोली- होली है ! होली है ! होली !!
होली है ! होली है ! होली !!



ऋषियों का देश

यह ऋषियों का देश ।

इसमें राजा 'राम' हुए हैं, इसमें हुए 'बुद्ध' भगवान ।
इसमें हुई 'कृष्ण' की लीला, इसमें दिया दधिचि ने दान ।।
'वालमीकि' हो गये यहीं पर, हुए यहीं पर 'तुलसीदास' ।
ग्रंथ महाभारत के लेखक- हुए यहीं पर ऋषिवर 'व्यास' ।।

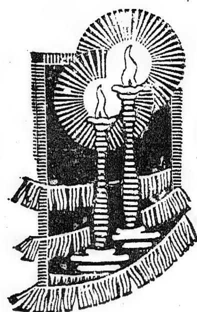
यह ऋषियों का देश ।

यहीं तपस्या की थी 'ध्रुव' ने, यहीं हुए बालक 'प्रहलाद' ।
बैठ यहीं पर 'नारद' से ऋषि- करते रहे राम को याद ।।
पढ़े यहीं पर 'वेद' विश्व ने, सुना यहीं गीता का ज्ञान ।
बार बार अवतार धार कर- आते रहे यहां भगवान ।।

यह ऋषियों का देश ।

यहीं हुए हैं 'गांधी' जिनका- अमर हुआ दुनिया में नाम ।
यहीं हुए वे भक्त कि जिनको- केवल राम नाम से काम ।।
कमल ! इन्ही ऋषियों के ऊपर- हम सब बच्चों को अभिमान
काम करो कुछ, नाम करो कुछ- तुम हो ऋषियों की सन्तान ।

यह ऋषियों का देश ।





धर्म किसे कहते हैं ?

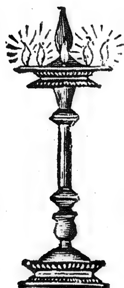
मां ! धर्म किसे कहते हैं ?
मां ! कर्म किसे कहते हैं ?
सुन ! धर्म किसे कहते हैं ।
सुन ! कर्म किसे कहते हैं ।

वह धर्म कि जिसका फल शुभ ।
प्रिय ! दुःख न दे जो चुभ चुभ ॥
वह कर्म कि जिसमें ईश्वर ।
मिल सके शान्ति जिसको कर ॥

मत धर्म बिगाड़ो बच्चो !
तुम धर्म कमालो बच्चो !!
तुम धर्म कर्म सब जानो !
तुम अपने को पहिचानो !!

तुम धर्म कर्म मत छोड़ो !
तुम भाग्य फूट का फोड़ो !!
कर कर्म राम को पालो !
तुम जग में धर्म कमालो !!





चलो पढ़ने !

'श्याम' ! चलो पढ़ने जल्दी तुम,
साढ़े नौ से अधिक बज गये ।
'वेदो' पढ़ने गया कभी का,
गाय गई, बाज़ार सज गये ॥

कहा 'श्याम' ने राम ! रात में–
रहा खेलता एक बजे तक ।
आंखें खुलीं देर से प्रातः,
व्यर्थ करी 'लल्लू' से झक झक ॥

कहा 'राम' ने, श्याम ! रोज़ तुम-
ठीक समय पर पढ़ने जाओ !
गुरु की पूजा करो प्रेम से,
अच्छी अच्छी विद्या पाओ !!

बातें करते हुए चल दिये,
पढ़ने 'राम, श्याम' दो बालक ॥
खूब पढ़े, फिर योग्य हो गये,
करने लगे नाम दो बालक ॥

बिना पढ़े बूढ़े किसान को-
पढ़ पढ़ कर अख़बार सुनाये ।
घर के सब छोटे बच्चों को-
अच्छे अच्छे पाठ पढ़ाये ॥

ग्राम ग्राम में, नगर नगर में-
देशभक्ति के गीत सुनाये ।
कहीं खिलाये फूल, कहीं पर-
अच्छे अच्छे पेड़ लगाये ॥



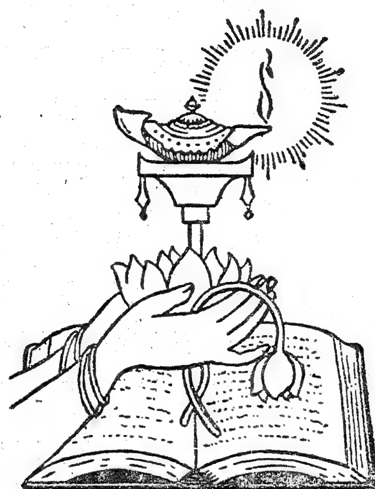
इतिहास पढ़ो !

सुनो इतिहास, पढ़ो इतिहास ।
इसी से होगा बुद्धि-विकास ॥

जान लोगे सब पिछली बात ।
समझ जाओगे असली बात ॥
पढ़ो सब 'रामायण' की कथा ।
यही है पढ़े लिखों की प्रथा ॥

'कृष्ण' की इतिहासों में कथा ।
जान लो कैसे सागर मथा ॥
कहानी 'गांधीजी' की पढ़ो !
सदा उन्नति की सीढ़ी चढ़ो !!

सुनो इतिहास पढ़ो इतिहास ।
इसी से होगा बुद्धि-विकास !!



यह काम करो

यह काम करो !

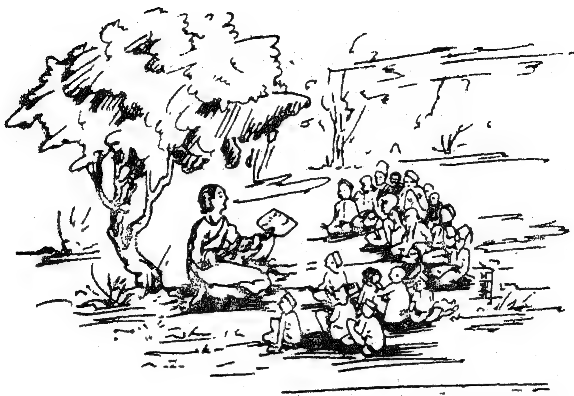
भूखों को भोजन करवाओ !
सब के दुख दूर करो जलदी !
कह रही सुहागिन सृष्टि आज,
सर में सिन्दूर भरो जलदी !!
यह काम करो !

पढ़ लिख कर करो अन्न पैदा,
नंगों के लिये बुनो कपड़ा।
कुछ काम करो, कुछ नाम करो,
छोड़ो जग का झूठा झगड़ा ॥

यह काम करो !

सब एक रहो, मत भेद करो,
मत बनो बड़े छोटे जग में।
सब योग्य रहो, स्वाधीन रहो,
मत बनो कभी खोटे जग में ॥

यह काम करो !



पढ़ो बच्चो !

उठो बच्चो ! पढ़ो बच्चो !
पलट दो देश की काया ।
राष्ट्र के धन ! राष्ट्र के मन !
जगाने जाग कर आया ॥

उठो जलदी, बढ़ो इतने-
चरण चूमे जगत सारा ।
तुम्हारी देश-सेवा से-
तुम्हारा देश हो प्यारा ॥

विश्व की आंख के तारो !
सिखादो प्यार दुनिया को ॥
फूल से कूल से बच्चो !
लगादो पार दुनिया को ॥

न निर्धनता रहे बाकी,
न कोई बे पढ़ा दीखे ।
तुम्हारी देश-सेवा से-
सदा दुनिया सबक़ सीखे ॥

तुम्हारी वीरता बच्चो !
जगत में सूर्य सी दमके ।
तुम्हारी धीरता बच्चो !
जगत में चांद सी चमके ॥

सुलझ जाओ, समझ जाओ,
न रह जाना कहीं कच्चे ।
करो भगवान की पूजा,
बनो तुम राम से सच्चे ।



सत्याग्रही 'प्रह्लाद'

सुनो कहानी तुम्हें सुनाऊं ।
सत्याग्रह की बात बताऊं ॥
हुआ एक 'प्रह्लाद' यहां पर ।
अमर हो गया सत्याग्रह कर ॥

कहा पिता ने बालक से यह–
'मैं ईश्वर हूं, मुझे 'राम' कह !'
एक रोज़ 'प्रह्लाद' कहीं पर–
खेल रहा था कूद कूद कर ॥

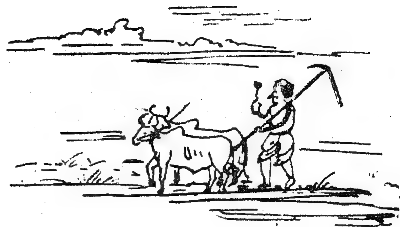
वहीं कहीं भट्टी जलती थी ।
भट्टी में बिल्ली पलती थी ।
बिल्ली के बच्चे रहते थे ।
बच्चे 'राम ! राम !' कहते थे ॥

समझ गया 'प्रह्लाद' वहीं यह ।
ईश्वर नहीं पिता, ईश्वर वह ॥
इस पर उसे पिता ने मारा ।
उसने 'राम ! राम !' उच्चारा ॥

बालक को पर्वत से डाला ।
फूल बन गया विषधर काला ॥
बाल न बांका हुआ बाल का ।
आगे सर झुक गया काल का ॥

फिर खम्बे से बांध बाल को-
लगा बुलाने बाप काल को ॥
चट ईश्वर नरसिंह रूप धर-
टूटे दैत्य हिरण्यकशिपु पर ॥

चीर फाड़ फेंका पिशाच को।
बालक बोला उठा आँच को-
"सच को आंच नहीं आती है।
सच की नौका तिर जाती है ॥"





किसान की कहानी !

मां ! दो बैलों को लेकर यह— कौन कांपता जाता है ।
जाता सुबह, शाम को फिर यह-- रोज़ लौट कर आता है ॥
कहो किस लिये इन बैलों को— नंगे पैरों ले जाता ?
घर से सुबह चला जाता फिर— रोटी कब कैसे खाता ?

फटी हुई जाकट पहिने है, जाड़ा नहीं इसे लगता।
भागा भागा जाता है यह, आता है हँसता हँसता॥
मां बोली, सुन मेरे मुन्ने! इसकी कहूं कहानी मैं।
मुन्नी बोली, भैया राजा, और शेरनी रानी मैं॥

यह किसान है, जिसका जीवन- जग को जीवन देता है।
सब के पेटों को भरता है, नाव सभी की खेता है॥
रोज़ खेत पर जाता है यह, दिन भर हल जोता करता।
यह भरता है पेट सभी का, इसका पेट नहीं भरता॥

इसने बोया, इसने काटा, गेहूं औरों के घर है।
इसका कच्चा घर है जिस पर- पड़ा फूस का छप्पर है॥
वर्षा में वह चूने लगता, और भीग जाते कपड़े।
पता नहीं कब यह कच्चा घर- हवा चले पर टूट पड़े॥

मुन्ना बोला, चल री मुन्नी! हम किसान को समझायें।
कच्चा घर पक्का बनवा कर- अच्छे कपड़े सिलवायें॥
उससे कहें, साथ हम तेरे, तू जग का अन्याय न सह!
पैसे वाले तुझे पीसते, इनसे सावधान तू रह!!



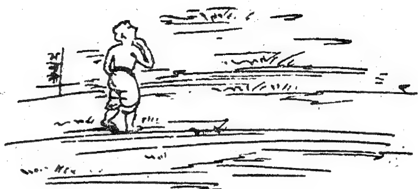
माँ बेटे की बातें !

मां ! मैं हूं बीमार, पिता जी लाये नहीं अनार।
दूध नहीं है, दवा न आई, मां ! यह कैसा प्यार ?
आज दिवाली भी है, लाये नहीं पिता जी खील ?
कहां खाण्ड के हाथी घोड़े, कहां खाण्ड की चील ??

मां की आंखें भर भर आईं, सुन बालक की बात।
बोली दूध दवा लाऊंगी, अब मैं चर्खा कात॥
मेरे बच्चे! भूल गया तू, कवि है तेरा बाप।
विधि का यह वरदान बना है- मुझ तुझ कवि को शाप॥

बालक बोला, यह क्या कहती हो मां! उलटी बात?
मेरे पिता लिखा करते हैं कवितायें दिन रात॥
और किया करते हैं उनका सब के सब सम्मान।
ऐसा कवि है कौन, नहीं है- जिसे दुखी का ध्यान?

मां बोली, यह सच है बेटे! कवि सब का सम्मान।
कवि को सब का ध्यान बावले! कवि का किसको ध्यान॥
मिट्टी के पिँजरे में उसके तड़प रहे हैं प्राण।
हर आंसू के साथ हृदय से- निकल बहे हैं प्राण॥



राजनीति क्या है !

मां ! राजनीति क्या है ?
मां ! रामरीति क्या है ?

जिससे राज्य बढ़े वह दृढ़ हो, राजनीति वह है।
जिससे राजा प्रजा सुखी हों, राम-रीति वह है॥
साम दाम वह दण्ड भेद से- जीत तुम्हारी है।
सत्य बोलना, हक़ न छीनना, नीति हमारी है॥

सुन राजनीति यह है !
सुन रामरीति यह है !!



विज्ञान क्या है ?

किसे कहते हैं मां ! विज्ञान ?
बता दो मुझको भी पहिचान ?
श्याम ! तुम ईश्वर को लो जान !
समझ जाओगे सब विज्ञान ॥

खोज कर जो कुछ भी लो जान।
उसी को कहते हैं विज्ञान ॥
उड़ रहे ये जो नभ में यान।
ज्ञान इनका भी है विज्ञान ॥

कहा श्याम ने मां ! यह बता –
लगे कैसे 'अणु बम' का पता ॥
चीज़ यह बुरी बला है श्याम !
भूल भी मत ले इसका नाम ॥

तुझे 'अणुबम' से क्या है काम।
सहायक हैं तेरे श्री राम ॥
लगा गाँधी बाबा का ध्यान।
हार 'अणु बम' जायेगा मान ॥



यह वीरों का देश

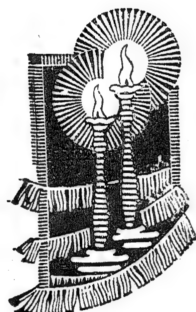
यह वीरों का देश।

यहां हुए हैं 'राम', जिन्होंने 'रावण' को मारा।
यहाँ 'शिवाजी' हुए, जिन्हों से 'अफज़ल खां' हारा॥
यहां हुई झाँसी वाली– जो भालों से खेली।
यहां 'जवाहर लाल', जिन्होंने स्वतन्त्रता ले ली॥

यह वीरों का देश।

यहां 'भीम' की गदा, पार्थ के तीखे तीर यहां।
रामचन्द्र से लड़ने वाले– 'लव कुश' वीर यहां॥
स्वतन्त्रता के प्राण हुए– 'राणा प्रताप' जैसे।
कहो, कहां! कब और हुए हैं– कर्मवीर ऐसे?

यह वीरों का देश॥



दीप जलाने आज चलें !

चलो ! विजय का झण्डा लेकर- दीप जलाने आज चलें !
रामायण का पाठ पढ़ाने, गीता गाने आज चलें !!

राक्षस 'रावण' से लड़ने को-
हम भी राजा 'राम' बनें ।
वीर 'जवाहर लाल' बनें हम,
गाँधी से निष्काम बनें ।।
दुष्ट कौरवों से लड़ने को-
'कृष्ण' हमें बनना होगा ।
वीर शहीदों के मन्दिर में-
दीपक बन जलना होगा ।।

विजय-दिवस पर रामचन्द्र की- याद मनाने आज चलें !
चलो ! विजय का झण्डा लेकर- दीप जलाने आज चलें !!

रामायण पढ़ रामचन्द्र के-
जीवन को अपनायें हम।
भारत माता के मन्दिर में-
मन के फूल चढ़ायें हम॥

राम नाम की माला लेकर-
दिल के दर्वाज़े खोलें।
अन्धकार से जा प्रकाश में-
रामचन्द्र की जय बोलें॥

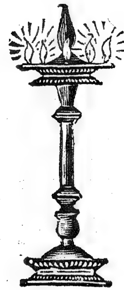
हृदय हृदय में प्रेम भाव के- फूल खिलाने आज चलें!
चलो! विजय का झण्डा लेकर- दीप जलाने आज चलें!!



ध्रुव की कहानी

वीर बालको ! सुनो कहानी,
'ध्रुव' की तुम्हें सुनाऊँ ।
देखो ईश्वर की महिमा का-
अद्भुत खेल दिखाऊँ ॥

एक बार जब पिता-गोद में-
जा बैठा ध्रुव प्यारा ।
सौतेली माँ ने गुस्से में-
आकर उसे उतारा ॥
तिरस्कार की ठोकर खाकर-
ध्रुव 'माँ ! माँ !' चिल्लाया ।
रोती हुई सगी माँ ने तब,
ध्रुव को यह बतलाया -
जाओ, जंगल में जाकर तुम-
परम पिता को पाओ !
वही गोद में लेगा तुमको,
तुम उसके गुण गाओ !!
सुन कर माँ की बात चल दिया,
घर तजकर 'ध्रुव' प्यारा ।
लगा हृदय से ध्यान राम का-
राम ! राम ! उच्चारा ॥
'ध्रुव' बालक की भक्ति देख कर-
राम दौड़ कर आये ।
उठा लिया गोदी में ध्रुव को,
'ध्रुव सच' सब चिल्लाये ॥



भैया दोयज

आओ राजा भैया ! आओ, मां से सुनें कहानी।
मां ! मां ! जल्दी सुना कहानी, बोली मुन्नी बानी
मां बच्चों को पास बठाकर, कहने लगी कहानी।
हुंकारा भर भर सुनते थे, मुन्ने मुन्नी रानी ॥
तेरे जैसा कोई बालक, भैया दोयज के दिन।
खड़ा सड़क पर खेल रहा था, अपनी गिट्टिक गिनगिन ॥
देखे उसने तिलक लगाये- बालक आते जाते।
पैसे गिनती बहिनें देखीं, भैया लड्डू खाते ॥
गया दौड़ घर, बोला मां से, मेरी बहिन कहाँ है ?
आंखें भर निर्धन मां बोली, रूखे टूक यहां हैं ॥
बहिन बड़े घर में है तेरी, भेजूं तुझको कैसे ?
बालक बोला 'नरसी' पहुंचे- 'जूनागढ़' में जैसे ॥

मिट्टी के लड्डू टिकियो घड़- लेकर साथ बिनौले।
बड़ी दूर भगिनी के घर पर- पहुँचा हौले हौले॥
उधर बहिन यह सोच रही थी, मैं कितनी हतभागी।
बड़े सेठ के घर ब्याही हूं, भैया दोयज भागी॥

मेरा निर्धन भैया मेरे- घर आता शर्माता।
इतने में यह कहा किसी ने- तेरा भैया आता॥
दौड़ी गयी द्वार पर झट से, कौली भर कर रोई।
आंखों के जल से भैया की- वह पोटली भिगोई॥

पास पड़ौसिन ननद जिठानी, बोलीं क्या लाया है?
बहिन! तुम्हारे पास प्रेम ले- यह भैया आया है॥
कहता हुआ पोटली देता, वह बालक सकुचाया।
गर्दन नीची करी बहिन ने, हृदय उमड़ता आया॥

राम! बचाओ लाज आज तुम, मेरा निर्धन भैया।
पार लगादो बीच भँवर से- मेरी टूटी नैया॥
कहते हुए पोटली खोली, निकले उस में मोती।
तियल मिठाई बने बिनौले, विजय प्रेम की होती॥



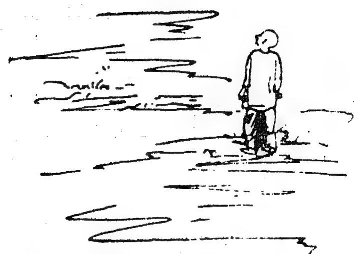
चलो बालको !

देश धर्म के लिये कमर कस-
भारत के बालको चलो !
चल सोहन ! चल मोहन ! तू भी,
गांधी सा चोला बदलो !!

चलो कूदते हुए युद्ध में,
वीर बालको ! बढ़ो बढ़ो !
ये ऊंची चट्टानें, इन पर–
वीर बालको ! चढ़ो चढ़ो !!

रक्षा करो देश की बच्चो !
भारत मां की जय बोलो !
दुख का द्वार बन्द करदो तुम,
सुख का दर्वाज़ा खोलो !!

बड़ों बड़ों को पीछे छोड़ो,
मुँह को देखें बड़े बड़े ।
वे ज़िन्दे भी मुर्दे हैं जो–
खाट तोड़ते पड़े पड़े ॥

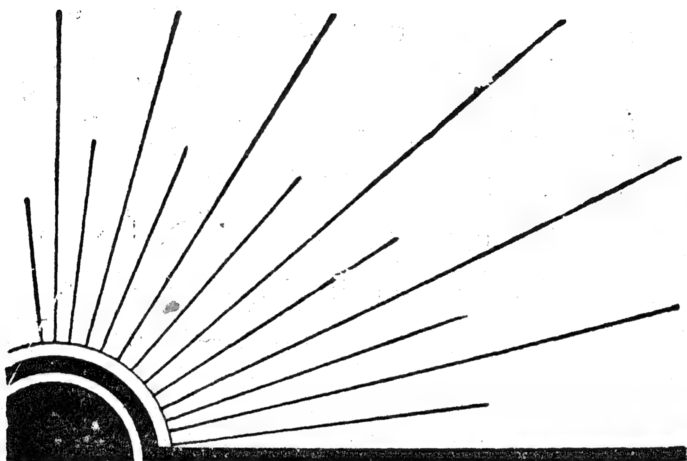


झूठ नहीं बोलेंगे ।

झूठ बोलना बड़ा पाप है, झूठ नहीं बोलेंगे ।
वैसी ही खेती काटेंगे, अब जैसी बोयेंगे ॥
जैसे पेड़ लगायेंगे हम, वैसे फल पायेंगे ।
जीवन में कांटे बोये तो, आम कहां खायेंगे ॥

सत्य बोलने ही से होगा– जीवन सुखी हमारा ।
मित्रो ! बोलो सत्य, सत्य से– होगा भला तुम्हारा ॥
सच सच बोलो ! सच कहने से– राजा बन जाओगे ।
झूठ बोलने से पग पग पर– ठुकराये जाओगे ॥

मान राम की बात श्याम ने– झूठ बोलना छोड़ा ।
संयम की लगाम से खींचा– अपने मन का घोड़ा ॥
भारत के आदर्श बालको ! चलो उजाले पथ पर ।
सच्चाई से चलो तैरते, जग में नौका बन कर ॥



होनहार बालक

हम सब होनहार बालक हैं,
हम अच्छे नागरिक बनेंगे ।
सब से मीठे बोल प्रेम से,
हम सब का सत्कार करेंगे ।

बड़े बड़े कुछ काम करेंगे,
छोड़ेंगे आपस के झगड़े ।
मैले वस्त्र नहीं पहिनेंगे,
धोयेंगे साबुन से कपड़े ॥

इधर उधर गलियों सड़कों में—
कहीं नहीं कूड़ा डालेंगे ।
और दूध मीठा पीने को—
अच्छी एक गाय पालेंगे ॥

गांव गांव में सभा करेंगे,
सब से अपनी बात कहेंगे ।
हम भारत के अच्छे बालक,
सब से आगे बढ़े रहेंगे ॥

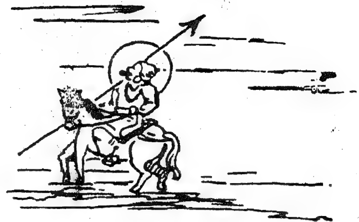


जय हिन्दी !

जय हिन्दी ! जय देव नागरी ! जय जय भारत माता ।
'तुलसी' 'सूर' और 'मीरा' का जीवन इसमें गाता ॥

नभ से नाद सुनें हिन्दी का, धरती पर हिन्दी हो ।
भारत माता के माथे पर- हिन्दी की बिन्दी हो ॥
यही राष्ट्र भाषा है अपनी, यही राज भाषा है ।
मातृ प्रेम का मधु है इसमें, सब की अभिलाषा है ।
जय जय हिन्दी का जयकारा, कोटि कोटि को भाता ।
जय हिन्दी ! जय देवनागरी ! जय जय भारत माता !!

सारी दुनिया ऊंचे स्वर से- जय जय हिन्दी ! गाये ।
जन जन का मन इस भाषा पर- पूजा फूल चढ़ाये ॥
चलो ! हिमालय की चोटी पर- जय जय हिन्दी गायें ।
हिन्दी की गंगा हिमगिरि से- दुनिया में लहरायें ॥
हिन्दी भाषा के भारत में, गीत तिरंगा गाता ।
जय हिन्दी ! जय देवनागरी ! जय जय भारत माता !!



यह किस की तस्वीर ?

यह किसकी तस्वीर ?
लिये हाथ में भाला, घोड़े पर जाता है वीर।
बेटे! ये 'राणा प्रताप' हैं, हिन्दू कुल के राजा।
सारी दुनिया में बजता है, इनकी जय का बाजा॥
सुन बेटे! मैं तुझे सुनाऊँ- इनकी अमर कहानी।
स्वतन्त्रता के लिये देश पर- इनकी चढ़ी जवानी॥
'चेटक' घोड़े पर जाते हैं देशभक्त रणधीर-
यह उनकी तस्वीर।
लिये हाथ में भाला, घोड़े पर जाते हैं वीर॥

इनकी रानी बड़ी वीर थी, कभी नहीं घबराई ।
बना घास की रोटी उसने– दुख में धीर बँधाई ॥
मोटी बिल्ली खींच ले गई, जब इनकी वे रोटी–
तब 'राणा प्रताप' के मन में– बात आ गई छोटी ॥

लगे डूबने राजा, रानी खींच ले गई तीर ।
नंगी भारत माँ होती थी, बनी बिचारी चीर ।

यह उनकी तस्वीर ।
लिये हाथ में भाला, घोड़े पर जाते हैं वीर ॥



सुनो कहानी !

बच्चो ! सुनलो एक कहानी ।
बात सुनाऊँ बड़ी पुरानी ॥
आँखों में आयेगा पानी ।
धर्मवीर की सुनो कहानी ॥

एक "हकीकत राय" हुआ है।
बालक पर अन्याय हुआ है॥
घर से पढ़ने गया बिचारा।
मुँह से 'राम राम' उच्चारा॥

मुस्लिम लड़कों ने दी गाली।
मारा और पीट दी ताली॥
दुर्गे माँ को खूब सुनाई।
हिन्दू की की खूब बुराई॥

बालक की आँखें भर आईं।
बोल उठा, मत करो बुराई॥
ईश्वर ने यह सृष्टि बनाई।
क्या मुस्लिम! क्या हिन्दू भाई!

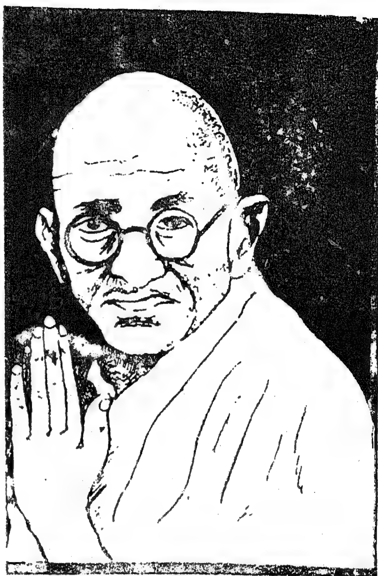
इस पर उन लड़कों ने मारा।
फिर वह पकड़ा गया बिचारा॥
वीर 'हकीकत' सह न सका यह।
कहे बिना कुछ रह न सका वह॥

बादशाह ने न्याय दिखाया।
बालक शूली पर लटकाया॥
रोये माता पिता बिचारे।
अमर 'हकीकत राय' तुम्हारे॥

बच्चों ने यह सुनी कहानी।
आँखों में भर आया पानी॥
बोले, यह तो न्याय नहीं है।
मरा "हकीकत राय" नहीं है॥

वह बसन्त राजा बन आता।
भारत में सुगन्ध बरसाता॥
दुनिया को दीपक दिखलाता।
मुरझाये सब फूल खिलाता॥





कौन हैं ये ?

खद्दर की लंगोटी पहिने,
बाबा जैसे भक्त कौन ये ?
माथे पर बल, सोच रहे कुछ,
कम्बल ओढ़े कौन मौन ये ?

देखो, कितने नगर निवासी-
इनकी जय जय बोल रहे हैं।
चाचा, बाबा, मोहन भैया-
जय जय कहते डोल रहे हैं ॥

माँ बोली- ये गाँधी बाबा,
करते हैं प्रार्थना यहां पर।
जल्दी कुर्ता बदल दूसरा,
हम भी चलकर सुनें वहां पर ॥

जल्दी से मुँह धो मुन्ने ने-
पहिन लिया कुर्ता खद्दर का।
फिर मां से यह कहा कमल ने-
ताला बन्द करो मां! घर का ॥

माँ ने ताला बन्द कर दिया,
'कमल' चल पड़ा हाथ पकड़ कर।
पहुँच प्रार्थना में बापू की-
मन से पग में झुका दिया सर ॥

बोले गाँधी बाबा सब से—
राम नाम लो, झूठ न बोलो !
सारे जग को सुखी बनाओ,
भेद भाव की गाँठें खोलो !!

तुम मनुष्य हो, होनहार हो,
पशुओं जैसे काम मत करो !
उन्नति करो, बढ़ो सब आगे,
भारत माँ के वीर मत डरो !!

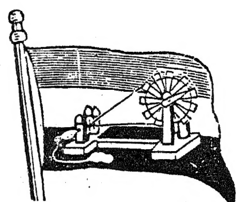


पार करो !

बालको ! तुम 'रामायण' पढ़ो !
'राम' से तुम 'लंका' पर चढ़ो !!
बात तुम दुखी हृदय की सुनो !
देश की उन्नति का पथ चुनो !!

घिर रही घर में काली रात।
बालको! उठ कर करो प्रभात॥
झुका दो चरणों में आकाश।
दीप से जल कर करो प्रकाश॥

अरे! तुम इस उपवन के फूल।
और तुम ही नदियों के कूल॥
बालको! तुम ही हो पतवार।
लगा दो इस दुनिया को पार॥



तिरंगा झण्डा

तिरंगा 'चक्र' का झण्डा, हमें है प्राण से प्यारा।
सदा उड़ता रहे ऊंचा, सबक सीखे जगत सारा ॥
गगन में सूर्य सा चमके, जगत में दीप जलवाये।
सदा उड़ता रहे ऊंचा, सदा सुख शान्ति बरसाये ॥
शहीदों का हृदय इसमें, 'जवाहर' से अजय इसमें।
अग्नि का पीत रँग इसमें, मनुष्यों की विजय इसमें ॥
चाँद सा श्वेत रँग इसमें, प्रेम की बह रही धारा।
तिरंगा 'चक्र' का झण्डा, हमें है प्राण से प्यारा ॥
जवानी झाँकती इसमें, कहानी झाँकती इसमें।
रवानी झाँकती इसमें, निशानी झाँकती इसमें ॥
इसी में जीत दुनिया की, इसी में शब्द सीता के।
इसी में देश की जग मग, इसी में गीत गीता के ॥
हमारी आन का तारा, देश की शान का तारा।
तिरंगा 'चक्र' का झण्डा, हमें है प्राण से प्यारा ॥



गाँ धी बा बा आ ओ !

गांधी बाबा ! हम बच्चों को-
छोड़ गये किसके ऊपर ?
घुटने टूट गये हम सब के,
दर्शन दे जाओ आ कर !

टुकड़े टुकड़े हुए हृदय के,
राख हो गई जीवन की ।
गाँधी बाबा ! तुम ही तो थे–
सारी रौनक उपवन की ॥

'बापू' ! 'बापू' ! चिल्लाते हम,
आओ बापू ! आ जाओ !
बिलख बिलख बच्चे कहते हैं–
आजाओ 'बापू' ! आओ !!

दीप बुझ गया, अन्धकार है,
कौन हमें पथ दिखलाये ?
आँसू रुकते नहीं हमारे,
नाव पार कैसे जाये ??

धरती पर हो, अम्बर में हो,
आंखों के आगे आओ !
प्यासी आंखें बुला रही हैं,
'बापू' ! अमृत पिला जाओ ॥